(a) (b)

IRS8

निबन्ध (ESSAY)

DTVF/17–ESY-E3

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Arvind Pratap Singh

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट न. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	5	0	6	0	7	3

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): अरविन्द

98

प्रश्न-पत्र सम्बन्धी विशेष अनुदेश

(प्रश्नों के उत्तर देने से पहले निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को कृपया ध्यानपूर्वक पढ़ें)

प्रवेश-पत्र में प्राधिकृत माध्यम में निबंध लिखना आवश्यक है तथा इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू०सी०ए०) पुस्तिका के मुखपृष्ठ पर निर्दिष्ट स्थान पर करना आवश्यक है। प्राधिकृत माध्यम के अलावा अन्य माध्यम में लिखे गए उत्तरों को अंक नहीं दिये जाएंगे।

प्रश्नों के उत्तर निर्दिष्ट शब्द-संख्या के अनुसार होने चाहियें।

प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा गया कोई पृष्ठ अथवा पृष्ठ के भाग को पूर्णतः काट दीजिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

(Please read each of the following instructions carefully before attempting questions)

The ESSAY must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (QCA) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in medium other than the authorized one.

Word limit, as specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड A और B में प्रत्येक से एक-एक चुनकर, दो निबंध लिखिये जो प्रत्येक लगभग 1000–1200 शब्दों में हो: 125×2 = 250

Write TWO Essays, choosing ONE from each of the Sections A and B, in about 1000–1200 words each: 125×2 = 250

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड–A / SECTION –A

1. समन्वित प्रयत्नों से हम देश को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर सकते हैं, जबकि एकता का अभाव हमारे समक्ष नई आपदाओं को उजागर करेगा।
   By common endeavor we can raise the country to a new greatness, while a lack of unity will expose us to fresh calamities.
2. कम नकद तथा नकदरहित अर्थव्यवस्था।
   Less cash and cashless economy.
3. यदि आप एक वर्षीय समाधान चाहते हैं तो बीज बोएँ, यदि पाँच वर्षीय समाधान चाहते हैं तो वृक्ष लगाएँ लेकिन यदि आप पीढ़ीगत समाधान चाहते हैं तो नारी को शिक्षा प्रदान करें।
   If you want to plan for a year sow a seed, if you want to plan for five year plant a tree but if you want to plan for a generation educate women.
4. विज्ञान की सीमाएँ जहाँ समाप्त होती हैं अध्यात्म की शुरुआत वहीं से होती है।
   Spirituality begins where science ends.

"समन्वित प्रयत्नों से हम देश को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर सकते हैं, जबकि एकता का अभाव हमारे समक्ष नई आपदाओं को उजागर करेगा।"

—×—

" सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै।
तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै॥"

हम साथ-साथ रहें, साथ-साथ भोजन करें, साथ-साथ वीरता के कार्य करें। एक-दूसरे से ईर्ष्या न करते हुए तेजस्विता को प्राप्त करें।

भोजन मंत्र के अर्थ को और स्पष्ट करें

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जब प्राचीन भारतीय संस्कृति में एकता, संगठन और समन्वित प्रयत्नों के महत्त्व को रेखांकित किया जा रहा था तो संभवतः उन ऋषियों-मनीषियों ने कल्पना भी नहीं की होगी कि इक्कीसवीं सदी का भारत कितनी विविधताओं से भरा होगा। आज हम धर्म, भाषा, रंग, खानपान, पहनावे से लेकर विचार विश्वास और अध्यात्म तक विविधताओं से भरे हुए हैं। सच्चे अर्थों में तो 'सहनाववतु सहनौ भुनक्तु' की भावना की जरूरत तो इस देश को आज समझ में आई है। इतिहास के विकास-क्रम में जैसे-जैसे इस देश की ~~जरूरत~~ विविधता बढ़ती गई है, वैसे-वैसे समन्वय की जरूरत भी बढ़ती गई है। इस अर्थ में यह बात सर्वाधिक है कि समन्वित प्रयत्नों से हम देश को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कर सकते हैं, जबकि एकता का अभाव हमारे समक्ष नई आपदाओं को उजागर करेगा।

भूमिका को और प्रभावी लिखें

इस सत्य को समझने के लिए हमें भारतीय इतिहास के दो सबसे प्रभावशाली और परिवर्तनकारी सामाजिक आंदोलनों को ध्यान करना

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

होगा- भक्ति आंदोलन और स्वाधीनता-संग्राम। भक्ति आंदोलन के समय भी भारत में महान उद्वेलन का समय था- तुर्क, अफगान, ईरानी आदि नई जातियाँ प्रवेश कर रही थीं और भारत के देशी राजा राजनीतिक लड़ाई हार चुके थे। ऐसे समय में कबीरदास ने जाति-पाँति और धार्मिक भेदभाव को व्यर्थ बताया-

"जाति-पाँति पूछै नहिं कोई
हरि को भजै सो हरि का कोई।"

और तुलसीदास ने उस सत्य की ओर संकेत किया कि जो सभी धर्मों का सार है-

"परहित सरिस धरम नहिं भाई
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई।"

अनेकता में एकता की यह भावना ही स्वाधीनता आंदोलन की शक्ति का स्रोत बनी और जब-जब एक समन्वय में कमी हुई, आंदोलन कमजोर पड़ गया। स्वाधीनता आंदोलन में गाँधी, नेहरू, पटेल, बोस के साथ-साथ मौलाना अबुल कलाम आजाद, एनी बेसेन्ट,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अरुणा आसफ अली और स्वर्ण सिंह ने कंधे से कंधा मिलाकर वह हासिल किया जो लगभग अकल्पनीय था। सत्य, अहिंसा के साथ-साथ धार्मिक और जातिगत-सांप्रदायिक सद्भाव पर हमारे नायकों का इतना जोर इसीलिए था कि वे भविष्य के भारत को बेवजह के झगड़ों में फँसकर, टूटकर बिखरते नहीं देखना चाहते हैं।

आज इस भावना को बचाए और जिलाए रखने की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि बाहरी आक्रमण और खतरों के समय तो स्वाभाविक रूप से समाज एक हो जाता है पर समाज की असली परीक्षा तो समन्वित प्रयत्नों के माध्यम से आपसी अंतर्विरोधों का हल निकालने में ही होती है।

आज सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनैतिक-वैचारिक-सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों की जरूरत है कि हम इस ऐक्य भाव को टूटने न दें। हमारा इतिहास और संविधान हमसे इतनी अपेक्षा तो करता ही है कि हम स्वाधीनता आंदोलन के

स्वतंत्रता आंदोलन के संदर्भ में राष्ट्रीय एकता को और स्पष्ट करें।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दौरान किए गए संघर्षों को अपने स्वार्थों की बलि न चढ़ा दें। जैसे-जैसे हम एकता के भाव को कमजोर होने देते हैं वैसे-वैसे पुरानी समस्याएँ तो सिर उठाती ही हैं, रोज नई-नई आपदाएँ भी उजागर होने लगती हैं।

पिछले कुछ वर्षों से रह-रहकर लव-जिहाद, गोवध, हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के ह्रास, सहिष्णुता के अभाव, नस्लीय भेदभाव, क्षेत्रीय आधार पर हिंसा, तर्कवादियों की हत्या और राजनैतिक विद्वेष की घटनाएँ इस देश के मानस को व्यथित करती रही हैं। ये समस्याएँ अलग-अलग सामाजिक पहचानों के मध्य ही हों ऐसा नहीं है। जब हिन्दू-मुस्लिम का झगड़ा नहीं हो रहा हो तो व्यक्तिगत स्वार्थवश जातिगत संघर्ष और शिया-सुन्नी विवाद प्रारंभ हो जाते हैं। यानी एक रुके तो दूसरा प्रारंभ हो जाता है। और इस देश की ऊर्जा का अधिकांश हिस्सा इन्हीं विवादों को शमित

भारत की वर्तमान परिस्थितियों को और स्पष्ट करें।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

करने में खर्च हो जाता है।

ऐसे में हम विश्व महाशक्ति के स्वप्न को साकार करने में रुचि रखते हैं तो यह अपने आप को भ्रम में रखने जैसा है। जब तक हम मुजफ्फरनगर, दादरी, मुम्बई की हिंसा में व्यस्त हैं, यह स्वप्न स्वप्न ही बना रहने वाला है। इसी समस्या को देखते हुए हमारे पूर्वजों ने सीधा सा मंत्र दिया था कि दूसरों के साथ वही व्यवहार करो जो तुम अपने साथ चाहते हो-

"आत्मानां प्रतिकूलानि
परेषां न समाचरेत।"

महाभारतकार की यह सीख ही समन्वय और सहिष्णुता की भावना का सार है। वस्तुतः भारत में एकता के अभाव से हमारी सामाजिक संरचना की न सिर्फ पुरानी दरारें उभर आती हैं बल्कि हमें नई-नई समस्याओं का भी सामना करना पड़ता है। हाल में ग्रामीण भारत

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और कृषक वर्ग में शहरी भारत के प्रति विद्वेष देखा जा रहा है। मंदसौर की घटना हो या जंतर-मंतर पर अर्द्धनग्न अवस्था में प्रदर्शन करते तमिलनाडु के किसान - दोनों इसी विद्वेष के परिचायक है। महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा हो या नक्सलवाद, कश्मीर, उत्तर-पूर्व की समस्याएँ, दोनों छोर इस एकता के अभाव से ही उपजते हैं।

भारत की समृद्धि के संदर्भ में और स्पष्ट चर्चा करें

एकता के अभाव का अर्थ है कि हम सभी अपने-अपने स्वार्थों से प्रेरित हैं। हममें एक देश, एक राष्ट्र का प्रतिनिधि होने का भाव नहीं है। यही कारण है कि सर्वोच्च न्यायालय के राष्ट्रगान अनिवार्य किए जाने जैसे फैसले देखने को मिलते हैं। जबकि ऐसी कोई भी भावना बाहरी दबाव से पैदा नहीं की जा सकती। हमें एक ऐसी भावना को आंतरिक रूप से प्रेरित करना होगा, जिसमें प्रत्येक नागरिक स्वयं को इस विराट

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परिवार का सदस्य माने। जैसे परिवार के सभी सदस्यों की विशेषताएं एक-दूसरे से अलग-अलग होते हुए भी सहयोग और बलिदान की अद्भुत भावना सभी में विद्यमान रहती है; वैसे ही इस देश को भी आज इसी भावना की जरूरत है। संभवतः ऐसे ही विचार ने इस सुभाषित को जन्म दिया होगा-

"अयं निजः परोवेति
गणनां लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु
वसुधैव कुटुम्बकम्॥"

हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि भाषा, धर्म, अर्थ के विवादों और दरारों को न पाट पाने के कारण ही कई देश विखंडित हो गए। बाल्कनाइजेशन की इस प्रवृत्ति के शिकार यूगोस्लाविया से लेकर भूतपूर्व सोवियत संघ, पाकिस्तान, सूडान जैसे देश हो चुके हैं। और भारत, जिसके बारे में प्रलय के भविष्यवक्ताओं ने 1947 में

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ही खण्ड-खण्ड हो जाने की भविष्यवाणी की थी, वह आज भी असुण्ण है-

"कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे-जहाँ हमारा।"

हमें बार-बार इस तथ्य को भी ध्यान करने की जरूरत है कि आजादी के बाद से विभाजन की हिंसा, तीन-तीन पुनर्गठन, भाषागत आधार पर राज्यों की माँग, मणिपुर-नागालैंड समस्या, पंजाब में अलगाववाद, तमिल पृथकतावाद, भूमिपुत्र की अवधारणा, धार्मिक वैमनस्य और जातिगत हिंसा जैसी जाने कितनी बाधाओं को इस देश ने सहिष्णुता और 'विविधता में एकता' के अहसास से ही पार किया है।

इसलिए आज जरूरत है कि समन्वित प्रयत्नों से एक दूसरे के दुख-सुख बँटाकर, एक-दूसरे के संघर्षों में साथ देकर हम देश को नई ऊँचाइयों की ओर लेकर चलें। इसके लिए सबसे पहले तो हमें उन मुद्दों की पहचान कर जागरूकता अभियान चलाना होगा

सामाजिक कुरीतियों के अंत और संवैधानिक सर्वोच्चता की और चर्चा करें

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो वास्तविक अर्थ में पूरे देश के शत्रु है। आर्थिक असमानता, रोग, कुपोषण, अशिक्षा, पितृसत्ता, कृषकों की दयनीय स्थिति, खराब अवसंरचना और पिछड़ापन सभी के समान शत्रु है। यह समझना और समझाना बहुत मुश्किल नहीं है कि पोलियो धर्म देखकर नहीं फैलता और इन्सेफलाइटिस से किसी एक जाति के बच्चे ही नहीं मरते। ~~अब~~ हमें उन सभी दुष्प्रचारों को समाप्त करना होगा जो इन वास्तविक-यथार्थ मुद्दों से हमारा ध्यान भटकाते हैं।

समाज में ध्रुवीकरण के आविर्भाव को स्पष्ट करें।

आज हम कृषशक्ति सभ्यता के आधार पर तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था हैं। अंतरिक्ष में PSLV, GSLV के साथ क्रायोजेनिक इंजन हो या सूचना-तकनीक क्षेत्र की सफलता, सस्ती दवाइयों की उपलब्धता हो या पोलियो पर विजय, योग का निर्यात हो या लोकतंत्र का उदाहरण बनना, भारत ने इन लक्ष्यों को समन्वित प्रयत्नों के माध्यम से ही प्राप्त किया है।

अब अगर विश्वशक्ति बनने के साथ-साथ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गाँधी और अम्बेडकर के उन सपनों को साकार करना चाहते हैं जहाँ राजनीतिक के साथ-साथ सामाजिक-आर्थिक समानता भी प्राप्त हो और पंक्ति के आखिरी आदमी को भी स्वराज्य की प्राप्ति हो तो हमें पुनः उसी भावना को जीवित करना होगा जो सहिष्णुता, समन्वय और एकता का आधार, वाद-विवाद-संवाद की गुंजाइश हो और एक देश के नागरिक होने का बोध।

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवाभागो यथापूर्वे संजानाना उपासते॥"

———x———.

पर्यावरणीय कारणों के संदर्भ में समन्वय को और स्पष्ट करें

51

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड–B / SECTION –B

1. एक राष्ट्र : एक निर्वाचन
   One nation: One election.
2. भारत में डिजिटल अंतराल : ग्राम्य रूपांतरण में अवरोध
   Digital divide in India: A roadblock to rural transformation.
3. कायांतरित भारत : नवीन भारत
   Transforming India: New India.
4. निष्ठावान पड़ोसी दूरस्थ रिश्तेदार से उत्कृष्ट है।
   A close neighbour is better than distant relative.

"कायांतरित भारत : नवीन भारत"

"The woods are lovely dark and deep
But I have promises to keep
And Miles to go before I sleep
And Miles to go before I sleep."
– रॉबर्ट फ्रॉस्ट

कहते हैं कि भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की मृत्यु के बाद उनके काम करने की मेज पर ये पंक्तियाँ हाथ से लिखी पाई गई थीं। आखिर वो कौन सी जिजीविषा होती है जो राष्ट्रनिर्माताओं को कठिन से कठिन समय में भी ऊर्जा से भरे रखती है। जब नेहरू ने 15 अगस्त 1947 को 'नियति से साक्षात्कार'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

('Tryst with destiny') की घोषणा की थी तो वे किस भारत का स्वप्न देख रहे थे? और आज जब वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 अगस्त 2017 को 'नवीन भारत' की परिकल्पना कर रहे हैं तो उनकी परिकल्पना के तत्त्व क्या-क्या हैं? अर्थात् 'कायांतरित भारत: नवीन भारत' में कायांतरण और नवीनता का अर्थ क्या है? इन प्रश्नों की पृष्ठभूमि के संदर्भ में ही विषय पर सम्यक् विचार किया जा सकता है।

भारत के संदर्भ में प्राचीनकाल से ही लगातार परिवर्तनों को और स्पष्ट करें।

वस्तुतः एक राष्ट्र के जीवन में 60 वर्ष की अवधि बहुत बड़ी नहीं होती। और इन साठ वर्षों में इतिहास का कालचक्र बड़ी तेजी से घूमा है। 15 अगस्त 1947 को जब हम आजाद हुए थे एक तरफ हमें विभाजन की त्रासदी को झेलना था और दूसरी तरफ विकास के पथ पर सरपट दौड़ने की इच्छा भी बलवती थी। राज्यों का पुनर्गठन,

औपनिवेशिक काल से स्वतंत्रता की ओर।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भूमि सुधार, हरित क्रांति से चलते हुए आज हम उदारीकरण के दौर में 'डिजिटल इंडिया' 'स्मार्ट इंडिया' के लक्ष्य की ओर अग्रसर हैं।

एक देश के तौर पर यह स्वाभाविक है कि जब हम नई चुनौतियों का सामना कर रहे हों तो उनके लिए नए उत्तर भी तलाशें। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि चुनौतियों के स्वरूप में विशेष अंतर न आने के बावजूद भी जब एक पीढ़ी का अंतराल स्वाभाविक रूप से गुजर जाता है तो नए उत्तरों की खोज अवश्यंभावी हो जाती है।

स्वतंत्रता प्राप्ति से अब आधुनिकता की ओर अग्रसर

इन सभी दृष्टियों से देखें तो जब 2047 ई० में हम आजादी की सौवीं वर्षगांठ मना रहे होंगे तो यह यक्षप्रश्न हमारे सामने होगा कि 100 वर्षों की यात्रा में हम कितना गांधी के स्वराज या अम्बेडकर की सामाजिक-आर्थिक समता के स्वप्न के समीप आए हैं? हम एक आशावान उत्तर दे सकें, इसके लिए हमें अभी से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रयास करने की आवश्यकता है। हाल ही में हमने उदारीकरण, वैश्वीकरण और निजीकरण के 25 वर्ष भी पूरे किए हैं और बदलते वैश्विक परिदृश्य में अपनी भूमिका की पुनर्खोज जरूरी हो गई।

आज भारत के सामने संकट दोहरा है। वैश्विक समाज की ओर से भी और आंतरिक भी। वैश्विक दृष्टि से देखें तो 2008 की मंदी के बाद से पश्चिमी देशों में स्वार्थ-साधन की प्रवृत्ति बढ़ी है। अमेरिका का जलवायु-समझौते से हटना, संरक्षणवाद, ब्रेक्सिट, फ्रांस से लेकर स्वीडन तक दक्षिणपंथियों का उभार हो या सीरिया-आई एस आई एस - इन सभी ने वैश्वीकरण के पहिए को उल्टा घुमा दिया है। आंतरिक रूप से भारत सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, वैचारिक सभी क्षेत्रों में उद्वेलित भी है और आकांक्षावान भी।

इस रूप में कायांतरित और नवीन भारत का मेरा स्वप्न एक ऐसे भारत का है जो

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परम्परा और प्रगतिशीलता के समन्वय से उपजे। आर्थिक रूप में यह समन्वय कृषि और उद्योग, ग्राम और शहर, विकास और पर्यावरण के समन्वय में देखा जा सकता है। अर्थव्यवस्था में आज मुख्य चुनौती रोजगार सृजन की है। उद्योग-क्षेत्र रोजगार सृजन में अभी सक्षम नहीं है और सेवा क्षेत्र के योग्य कुशलता सभी को देना सम्भव नहीं है। फिर सेवा क्षेत्र की अपनी सीमा भी है। दूसरी तरफ कृषि क्षेत्र का संकट और गहरा हो गया है। प्रतिवर्ष 10 से 15 हजार किसानों की आत्महत्या डरावनी प्रतीत होती है।

तकनीकी विकास और धर्म से समन्वय के संदर्भ में और चर्चा करो

ऐसे में नवीन भारत को खाद्य-सुरक्षा, रोजगार-सुरक्षा और आत्मनिर्भरता को आधार बनाना चाहिए। जनसांख्यिकीय लाभांश की दृष्टि से 'स्किल इंडिया मिशन' के साथ-साथ मेक इन इंडिया, स्टार्ट-अप, स्टैंड-अप इंडिया आदि के माध्यम से उपरोक्त चुनौतियों का सामना किया जा सकता है। पर जरूरी है कि विकास को अलग-अलग

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आँचों में देखने से बचा जाए। उदाहरण के लिए कृषि और उद्योग को प्रतिस्पर्धी नहीं अपितु पूरक के रूप में देखा जाए। खाद्य-प्रसंस्करण उद्योग इस समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण सिद्ध होगा।

इसी प्रकार राजनैतिक क्षेत्र में योजना आयोग के स्थान पर नीति-आयोग की स्थापना कर इस परिवर्तन का आगाज किया गया है। 'सहयोगात्मक संघवाद' की अवधारणा इस नए भारत का सार होगी। पर इसके लिए सी.बी.आई और प्रवर्तन निदेशालयों के दुरुपयोग से बचना होगा और राज्यपालों को संवैधानिक अपेक्षा के अनुसार कार्य करना होगा। नवीन भारत के लिए सबसे आवश्यक शर्त है भ्रष्टाचार का समूल विनाश। भ्रष्टाचार को समाप्त किए बिना रूपांतरण की यह प्रक्रिया पूरी नहीं होगी।

परिपक्व लोकतंत्र के रूप में और स्पष्ट चर्चा करें।

नोटबंदी, कैशलेस अर्थव्यवस्था को

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रोत्साहन और विविध सुधारों के माध्यम से इस दिशा में प्रयास किया गया है। इन प्रयासों को आगे ले जाने की आवश्यकता है। नवीन और कायांतरित भारत के लिए यह भी राजनीतिक रूप से विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका अपनी-अपनी संवैधानिक मर्यादाओं में रहते हुए कर्तव्य का पालन करें।

संसाधनों में हो रहे लगातार परिवर्तनों की और चर्चा करें

नवीन भारत के लिए सबसे आवश्यक होगा कि वह सामाजिक-आर्थिक समता के लक्ष्य के अधिक से अधिक समीप पहुंच सके। यहाँ महिलाओं के विरुद्ध होने वाली हिंसा और भेदभाव को समाप्त कर एक लैंगिक रूप से न्यायपूर्ण समाज की स्थापना होगी। सामाजिक रूप से कायांतरण के लिए भारत को धार्मिक-जातीय-क्षेत्रीय-भाषागत भेदभावों को भुलाकर रोग, असमानता, कुपोषण, अशिक्षा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसे मूल मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है। नवीन भारत के लिए यह क्षेत्र सबसे ज्यादा चुनौतियाँ पेश करने वाला साबित हो सकता है।

ऐसे में आज समय आ गया है कि हम नवीन भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए नई चुनौतियों का सामना करें और परम्परागत प्रणालियों को आधुनिक समय के अनुसार ढालकर विश्व में अपने योग्य स्थान प्राप्त करने की दिशा में आगे बढ़े।

पर्यावरणीय परिवर्तनों और क्या करें

47

Copyright – Drishti The Vision Foundation